गोलालारीय समाज का मुखपत्र

मासिक

गोलालारीय दर्शन

अपनों के साथ अपनी बातें

सफलता के 10 वर्ष

लेट पोस्टिंग

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है -
www.golalariya.com
9406744064

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/IDC/1252/2018-2020

सेवा में,

प्रतिभाशाली विशेषांक

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 10 अंक : 9 पृष्ठ संख्या : 6 माह - 15 जुलाई 2019 सहयोग राशी 1100/- देकर सदस्य बनें ।

प्रतिभाशाली नौनिहालों ने परिवार व समाज को किया गौरवांवित

दिशा, इन्दौर
शिल्पा-स्व. मनोज जैन
10वी - 97.4%
CBSE

आस्था, गंजबासौदा
सरिता-राजेन्द्र जैन
10वी - 96%
CBSE

इप्शिता, जबलपुर
अतुला-उन्मेष जैन
12वी - 95.2%
CBSE - Commerce

ममत्व, मंडीबामोरा
मधुबाला-प्रमोद जैन
12वी - 92.6%
Board - PCM

अंशी, सीहोर
सुनीता-पंकज जैन
12वी - 90.8%
CBSE - PCM

गोलालारीय दर्शन के प्रतिभा सम्मान अंक का संयोजन करना अपने आप में ही बड़ा उत्साहवर्धक होता है । प्रतिवर्ष नई नई प्रतिभाओं से अवगत होना, उनके पूरे वर्ष की घोर तपस्या को फलीभूत होते देखना उनके साथ ही पूरे परिवार के लिए किसी उत्सव से कम नहीं होता । वैसे बच्चों के साथ माता पिता और पूरा परिवार ही अपने सब्र, श्रम, धन आदि की परीक्षा देता है । इसीलिए परीक्षा फल की प्रतीक्षा पूरे परिवार को होती है ।

वैसे तो प्रतिभाशाली छात्र छात्राओं का सम्मान परिवार और समाज के लिये प्रसन्नता और गौरव का विषय होता है । समाज और अनेक सामाजिक संगठन हर वर्ष प्रतिभा सम्मान समारोहों का आयोजन करते हैं । सफल बच्चों की मंच पर प्रशस्ति दी जाती है । उच्च अंक प्राप्त करने वाले कुछ बच्चे खुश हो जाते हैं और बहुत से उस मानदंड से थोड़ा ही नीचे रहने वाले दुखी, भले ही उनकी काबिलियत ज्यादा ही क्यों न हो । लेकिन किसी कारणवश अंको की दौड़ से वह पिछड़ गया तो लगता है जैसे सब खत्म । वास्तव में परीक्षा के वो तीन घंटे ही एक बालक को प्रतिभाशाली या औसत छात्र घोषित कर देते हैं । काबिलियत मापने का यह पैमाना और हमारी अंक प्रणाली बच्चे के समग्र व्यक्तित्व का आकलन नहीं करती । एक निर्धारित पाठ्यक्रम से लिए गए प्रश्नों के निर्धारित फार्मेट में निश्चित किये उत्तरों को रटकर हल करके उच्चतम अंक या पूर्णांक प्राप्त करना आज सरल हो गया है । इस वजह से बोर्ड परीक्षाओं में शत प्रतिशत या उसके आसपास अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या बहुत बढ़ गयी है लेकिन यही बच्चे निर्धारित पाठ्यक्रम से हटकर स्वाभिव्यक्ति की परीक्षा में पिछड़ जाते हैं । काबिलियत साबित करने के लिए कामयाबी का टैग लगाना जरुरी है क्योंकि स्वभाव वश हम सब कामयाबी का ही जश्न मनाते हैं ।

बोर्ड्स और विभिन्न व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु ली जाने वाली परीक्षाओं की भी कमोबेश यही स्थिति है । इनमें भाग लेने वाले लाखों विद्यार्थियों में से कुछ ही सफल हो पाते हैं। सफलता का मापदंड कुछ विशेष कोर्सेस में प्रवेश मिल जाना है । अंकों के आधार पर होने वाले प्रवेश में छात्र सिर्फ भविष्य में ऊंचे पैकेज दिलाने वाले विषयों का चयन करते है, भले ही वे उनकी रुचि और योग्यता के अनुसार हो या नहीं । इन विषयों में डिग्री प्राप्त करने के बाद भी अनेक बच्चे कई बार कार्यक्षेत्र में सफल और संतुष्ट नहीं हो पाते और बाद में दूसरे क्षेत्रों में अपना भाग्य आजमाते देखे जाते हैं । न तो ये बच्चे उस विषय में काबिल हो पाते हैं, न ही अपने क्षेत्र में कामयाब ।

अंको के आधार पर आंकी गयी योग्यता बालक के बौद्धिक विकास का ही आकलन करती है। किंतु केवल इसी आधार पर व्यक्ति के भविष्य की सफलता या असफलता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता । प्राय: देखा गया है कि शैक्षणिक क्षेत्र में उच्च शिखर पर पहुंचने वाले समाज के लिए विशेष योगदान देते हुए दिखाई नहीं देते । इसके विपरित शिक्षा में सामान्य या औसत रहे लोग परिवार और सामाजिक सेवा आदि में बढ़चढ़कर आगे आते दिखते हैं । व्यक्ति की कामयाबी केवल शिक्षा में उच्च अंक प्राप्त करने या अधिक धन कमाने से नहीं आंकी जानी चाहिए वरन् मानवीय गुणों में भी स्वयं की काबिलियत देश, समाज और परिवार के समक्ष रख सके तो वास्तव में वो एक कामयाब व्यक्ति हो सकता है । आगामी समय में शिक्षा के क्षेत्र में ऐसा कोई परिवर्तन हो सके तो यह बड़ी उपलब्धि होगी । हमारे आज के प्रतिभाशाली और कामयाब छात्र छात्रायें भविष्य में उतने ही काबिल भी बनें ऐसी ही शुभकामनाओं के साथ... - अनुपमा जैन, सहसंपादिका, इन्दौर

आयुष बने एपल के सबसे छोटे डेवलपर

अमेरिका में निवासरत अमित-आभा जैन के 10 वर्षीय सुपुत्र आयुष ने पिता के चेलेंज को स्वीकार कर एपल कान्फ्रेंस में फीजिक्स पर आधारित गेमिंग एप मात्र 10 दिन में ही बना डाला । आयुष को रोजाना 30 मिनिट के लिए ही डिजिटल डिवाईस इस्तेमाल करने का अवसर मिलता था लेकिन इतने कम समय में भी वह अपने पंसदीदा शौक कोडिंग करता है । आयुष के पिता ने बताया कि आयुष को मोबाइल कम्प्यूटर के लिए रोजाना 30 मिनिट का समय मिलता है इतने समय में वह कोडिंग के साथ गेमिंग भी कर लेता है । इसकी प्रतिभा को देखकर मैंने आयुष को एपल कान्फ्रेंस में जाने की चुनौती दे दी और कहा कि वह प्रतियोगिता में प्रवेश नहीं कर पायेगा । आयुष ने इस चैलेंज को स्वीकार कर मात्र 10 दिन में ही गेमिंग एप बनाकर एपल के सबसे छोटे डेवलपर होने का रिकार्ड बनाया ।

इस अवसर पर आयुष ने कहा कि मेरे माता पिता टेक्नोलॉजी फील्ड से है उन्हें कोडिंग करते देख बचपन से ही कोडिंग पसंद आने लगी थी । एपल कान्फ्रेंस में आकर मैने कई चीजें सीखी है । ऐसी चीजें जिसके बारे में ज्यादातर लोग नहीं सोचते है, खुद का मोबाइल न होने से दूसरे एप इस्तेमाल नहीं कर पाता हूँ । मेरी रुचि कारों और उनकी खास टेक्नोलॉजी में भी है । बड़ा होकर मैं टेस्ला जैसी कारें के तकनीक पर काम करना चाहता हूँ । आयुष गोलालारीय दर्शन के परम संरक्षक श्री सुभाष-बसंती जैन, मुंबई के नाती है ।

उपलब्धियों पर हार्दिक शुभकामनाएँ...

श्री आशीष डॉ. कुंदनलाल-कुसुम जैन, राजस्थान के सिंघानिया विश्वविद्यालय से "**सूर्य नमस्कार एवं योगासन व्यायामों का बुंदेलखंड विश्वविद्यालय अंतर महाविद्यालयीन एवं खो-खो पुरुष खिलाड़ियों की क्रियात्मक क्षमता के घटकों पर प्रभाव**" विषय पर पी.एच.डी कर उपाधि हासिल की । आप मऊरानीपुर स्थित श्रीराम धाम स्नातकोत्तर महाविद्यालय बी.एड. विभाग के प्रवक्ता है ।

कु. राखी सुपुत्री रविन्द्र-सरिता जैन, इन्दौर ने आईआईटी मद्रास से स्ट्रक्चर इंजीनियरिंग (एम.एस.) कर वर्तमान में टोरंटो, कनाड़ा में पदस्थ है ।

श्री मधुर सुपुत्र रविन्द्र-सरिता जैन, इन्दौर ने इस वर्ष सीए की उपाधि प्राप्त कर बैंगलोर की प्रतिष्ठित कंपनी में कार्यरत है ।

श्री श्रेय जैन सुपुत्र स्वतंत्रकुमार जैन, चचई ने सोलापुर स्थित व्हीआईटी इंजीनियरिंग कॉलेज में बेस्ट स्टूडेंट ऑफ ईयर का अवार्ड प्राप्त कर अपनी शिक्षा पूर्ण कर पुणे की प्रतिष्ठित कंपनी में कार्य भार ग्रहण किया ।